



पिंदी पहलवान और लखनऊ के ठग



Trishul Comics



पिद्दी पहलवान और लखनऊ के ठग

संस्थापक:
मनीष चन्द्र गुप्त

कथानक: शशिप्रभा
चित्रांकन: अजय शंकर भारद्वाज

पिद्दी पहलवान, गांव कीरतपुर के नामी पहलवान। बड़े-बड़े पहलवानों को पछाड़ा कुछ को तकत से, कुछ को अकल से। कुछ को धुमाकर आकाश में ऐसा उछाला कि आज तक उनका पता नहीं। फिर चल पड़े लंगर छुड़ाने देश की यात्रा पर कि अंतर किसी में दूध-स्वप्न हो, तो आ जाए अस्वाड़े में। साश में उनके दो चेले लटकन और फुदकन थे। लटकन बचपन में बहुत शैतान था। उसकी मां उसके दोनों हाथ बांध अक्सर उसे बवूटी से लटका दिया करती थी। सो उसकी माहें बेहद लम्बी थीं पंजे इतने मजबूत हो गए थे कि जिसे उसमें जकड़ता, पलक अपकते चूर-चूर हो जाता। फुदकन को फुदकने की आदत थी। वह फुदकता तो ऊंची-ऊंची दीवारें, नदी-नाले पार कर जाता। — देश भ्रमण के उद्देश्य से अपनी स्वतारा गाड़ी पर पिद्दी पहलवान दोनों चेले के साथ एक दिन निकल पड़े कीरतपुर से और फिर अपने पहले पड़ाव लखनऊ में पहुंचे।



तो मुसुंजी लखनऊ आ गया। सुनाते हैं यहां बड़े-बड़े पहलवान रहते हैं।

लखनऊ शहर बाढ़ में डूब लेगी। पहले किन्ही सवाय में चलो। भुख लगी है।



बस गाड़ी बोको यही ठहरेगे।



तखनऊ के ठग

बोली देर
बाद -

मालिक, साराय का साना
आटा खत्म हो गया।
वे और आगरहे
हैं।

हे भगवान! चलो,
उन्हें भगा दें। वरना
दो दिन में हमारा
दिवाला निकल
जाएगा।

जगब -

ले,
भगा
हमें।

और
भगाएगा ?

यह
ले!

साराय का मालिक भाग कर
तखनऊ के सबसे बड़े पहतयान
जगबू के पास पहुँचा -

गुंडे... ? उनकी हिम्मत
कैसे हुई ? चलो
मैं देखता हूँ।

उधर -

सारा
मैदान बाफ,
आओ थोड़ी
देर सो
लें।

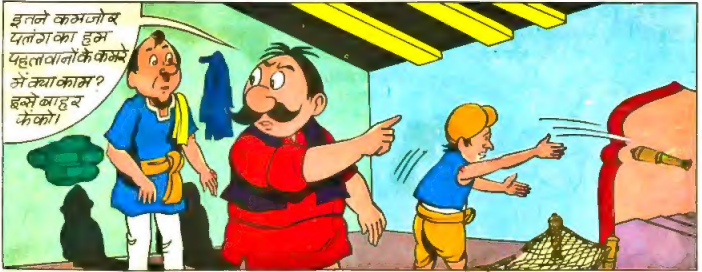
पलंग काफी बड़ा
है। सब इसी पर
सो जाएंगे।

हां, आ
जाओ।

बेचारी
पहलवान बाफ,
साराय में तीन गुंडे
घुस आए हैं। आरमार
कर लुरी गत
बना दी है
हमारी।



इतने कमजोर
पलंगे का हम
पहलावालों के कंधे
में क्या काम?
हमें बाहर
के को।



अरे
यह
क्या?



बचो!
बचो!!

लगता है, वे अभी तक तोड़
फोड़ में लगे हैं। अबवान
कसम इसी पाट से
उनके सिर तोड़
दूंगा।



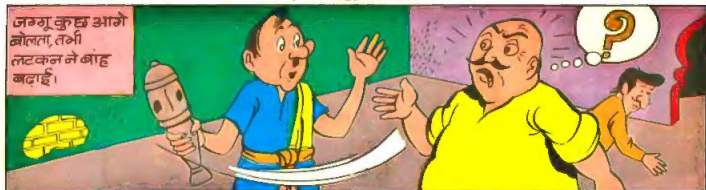
टांगें भी।



देखतमलों, पांच मिनट में
आरे मुक़द्दाम की भयपाई
कबके बाहर निकालो
तबना...



जंगू कुछ आगे
बोलता, तभी
लखन ने बांह
बाँधा है।



और फुदकन
फुदका -



यह देख बराय
का मालिक तो
डर कर भाग
गया। और -

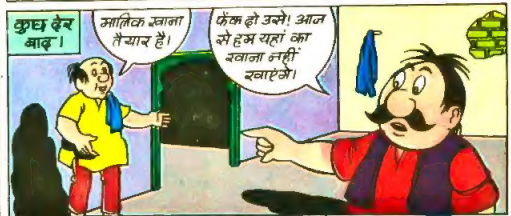


सौमियत चाहते हो तो लखनऊ
के सारे पहलवानों से कहो, जब
तक हम यहाँ रहें, हमारी
ज्वातिर करे।

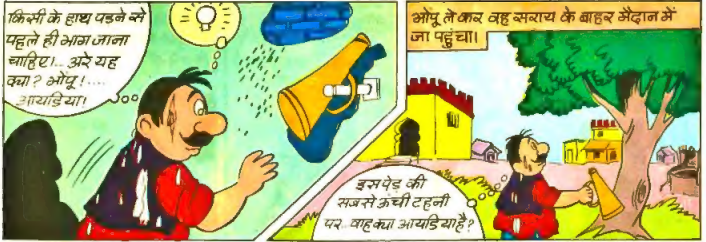


और उस दिन के बाद,
पिपुही पहलवान बराय
में बेताज के बादशाह
बन गए।









लखनऊ के ठग

एक दिन पिद्दी
पहलवान से
मिलने एक बुढ़िया
सराय में आई।



गुरू जी, मेरा इकलौता बेटा छपरासी
के जसीदार के यहां नौकर था।
गर्भियों में धर आता था। इस बार नहीं
आया। मैं मिलने गई तो, मिलने नहीं
दिया। मुँह से पिटवाकर भगा
दिया। मेरी मदद करो!

यह बात! मैं
कल ही जाकर
तेरे बेटे को
लाऊंगा...!
वायदा!

बुधर-

मुना है जम्बू उस्ताद
कि पिद्दी पहलवान
कल छपरासी जाएगा
मौका अच्छा है!



कल अपनी
बेइज्जती का
बदला लूंगा!
हा-हा-हा!

अगले दिन-



कहां जा रहे
हो बेटा?

छपरासी!

मैं बुढ़ा बीमार हूँ
आलिक! छपरासी
तक पहुँचा दो, तो
दुआ करूँगा।

ठीक है।
बैठ जगो
गाड़ी पर!
दुआ करूँगा।



कुछ
समय
बाद-

छपरासी
आ गया
गुरू जी।

छपरासी आ
गई बाबा!
जहां जाना
है जाओ!



कहां जाऊं?
अरे अपनी गाड़ी
खोड़ कर कहाँ
जाऊं?

बुका शोर मचाने लगा।



देखो, देखो
लोगों! मैंने इनपर
तनख्ता खा कर गाड़ी
पर बैठाया। अब मुकने
ही नीचे उतरने को कह
रहे हैं।

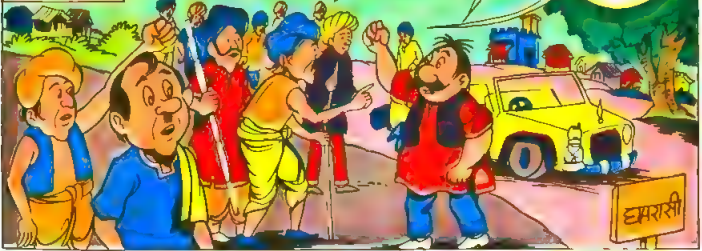
बूटे का शोर सुन
कार वहां भीड़
जमा हो गई—

गाड़ी इस
बूटे की है।

गाड़ी
मेरी है।

गाड़ी
मेरी है।

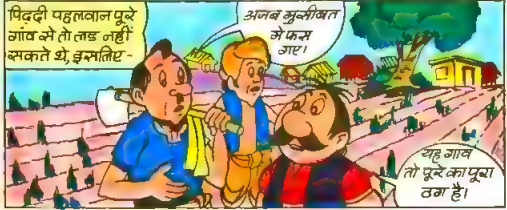
इन्हें जमींदार के
सामने चलो। वही
न्याय होगा।



जमींदार के यहां जाने पर—

धुप रहो! तुम
लील अदमी कहते हो—
गाड़ी तुम्हारी है। ये लील सौ
कहते हैं— गाड़ी बूटे की है।
इसलिए फैसला हुआ गाड़ी
बूटे की है। राजा के तौर पर
तुम लील एक हुफ्ते तक
मेरा खेत
जोतोगे।

पिढ़दी पहलवान पूरे
गांव से तो लख जहीं
सकते थे, इसलिए—



अजब मुन्सीखत
मे फस
गए।

यह गांव
तो पूरे का पूरा
उम है।

तभी वहां जमींदार अपने बेटे के
समय पहुंचा—



जल्दी-जल्दी हाथ चलाओ।
बरना ! धुनिया, तुम
हुमास बवाना लाओ।

अभी
लाया
भारिक!

काश, यह
अकेला होता तो
बतला देते!

जमींदार कुछ
आगे निकल
गया तो—

तुम छोटे जमींदार
हो न! आओ तुम्हें
तालाब में
नहलाए।



हां, हां
चलो।

लखनऊ के ठग





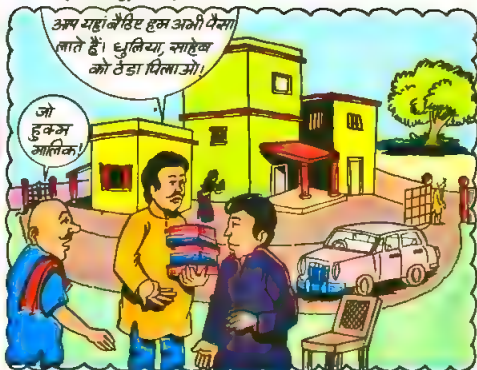
उन्होंने कहा भी कि कुछ जेवर कम कर दें। पर मेरी अकल पर पत्थर पड़ गए। मैंने सारे जेवर उन्हें दे दिए। बकाया पचास हजार लाने के लिए अपने बेटे को गाड़ी लेकर उनके साथ भेज दिया।



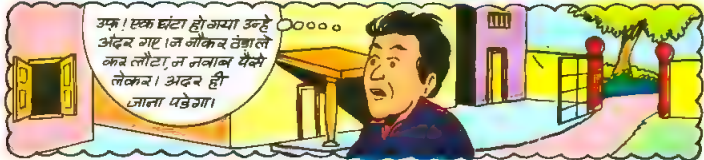
लखनऊ के ठग

अप यहाँ बैठिए हम अभी पैसा लाते हैं। धुलिया, साहेब को ठंडा पिलाओ।

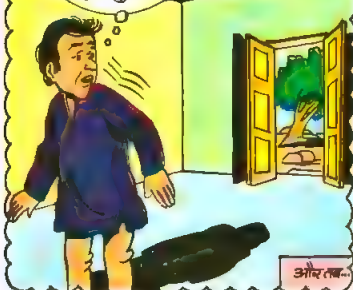
जो हुक्म आलिक!



उफ़! एक छंटा हो गया उन्हें अंदर गए। न जीकर ठंढाले कर लौटा, न नवाब यैसे लेकर। अंदर ही जाना पड़ेगा।



अरे यह मकान एकदम खाली! कौहीं साभान, न आदमी! और यह पिछला दरवाजा! खुला हुआ?



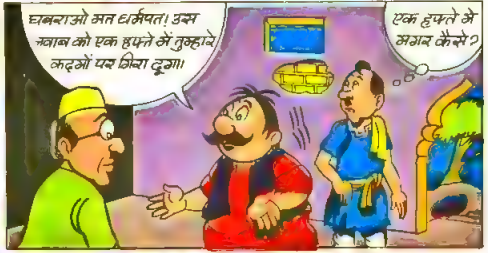
धर्मपत के बेटे ने एक शम्शेर से घुसा -



मुझे आई साहेब! इस हवेली के कौन बहता है?

महीनों से बचाती पड़ी हैं। बात सी सपना महीना भला कौन किरायेदार दे सकता है।

और तब...



लखनऊ के ठग

ब्रह्मी दिन दोपहर को पिढ़ी पहलवान की बटारा गाड़ी छपरासी की ओर चल दी। गाड़ी में तीन व्यक्ति थे- एक साधू महात्मा और दो चेले। साधू बने पिढ़ी पहलवान अपने चेलों को समझा रहे थे।

हमे हर घर का भेट लेना है समझ गए न।

हां, अमर वह नवाब वहां कहां मिलेगा?

छपरासी में कोई ऐसा नवाब न ही रहता।

छपरासी

बको मत। छपरासी वह गढ़ा सामने गाड़ी इस छुरमुट में खड़ी कर दो। मैं उधर धूनी बजाता हूं। तुम दोनों जाओ। मेरा गुणगान करो।

बुर पलघट पर-

अरी पुनो, देख गांव में पहली बार साधू आए।

चल इन्हे हाथ दिखाएं।

आज इनके कपड़े उतरवाएंगे। ही-ही-ही-

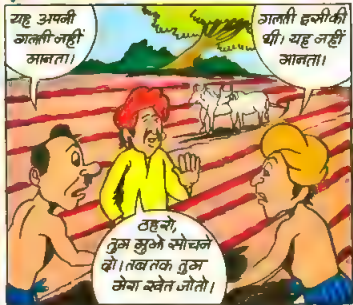
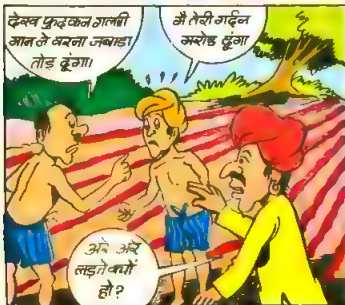
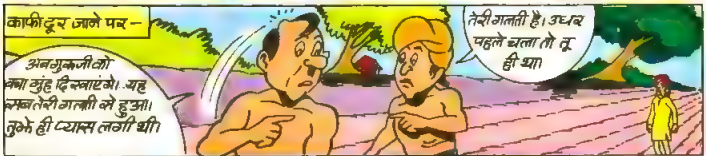
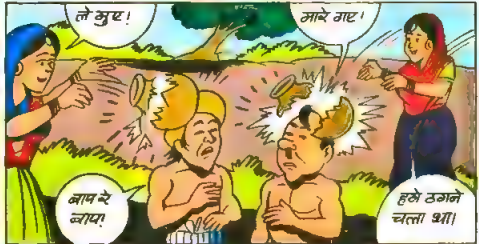
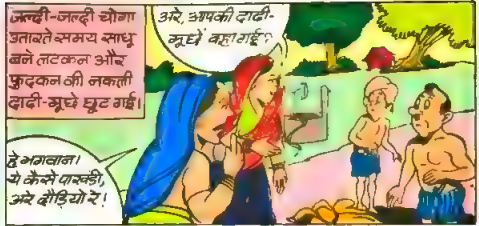
गुरुजी, समझा गए हैं। जो काम नखलऊ की पुलिस नहीं कर सकी, वह करने चले हैं।

और वह भी उल्टे तरीके से। भता वह नवाब यहां कहा से आया?

तभी-

अरी यह क्या कर रही हो? मेरा सांको ऊपर से नीचे तक तर कर दिया.. महात्मने जलदी से कपड़े उतार कर सुखा लो। इस पानी से गीले कपड़े खुजली पैदा करते हैं।

अरी यह क्या कर रही हो? मेरा सांको ऊपर से नीचे तक तर कर दिया.. महात्मने जलदी से कपड़े उतार कर सुखा लो। इस पानी से गीले कपड़े खुजली पैदा करते हैं।



लवक के तलाश

उधर-

इतनी देर
लेगाई! उन दोनों
का कुछ पता नहीं.
कुछ गडबड़ है।
देखना चाहिए!



साधु का वेश धरे पिद्वी पहलवान
लवकन और फुदकन की तलाश
में चला दिए।

पता नहीं,
कहाँ फुस गए
दोनों
कर्मबन्धन!



कुछ दूर आगे-

सुनो
भाई तुमने मेरे
दो घोड़ों को तो
कहीं नहीं देखा

अगर
बता दूँ, तो
क्या दोगे?



अरे बताओ तो! कितने
गए तो मेरे पास जो
कुछ है, सब
दे दूँगा।

तो आओ मेरे साथ।
जबकि अपनी बात
सादर बयान।



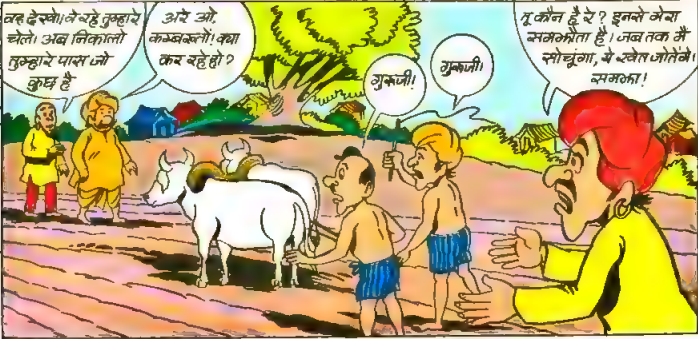
वह देखो! ने रहे तुम्हारे
घोड़ों। अब निकालो
तुम्हारे पास जो
कुछ है

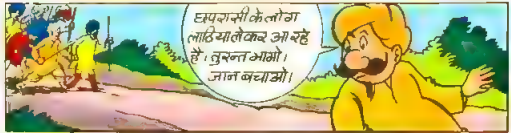
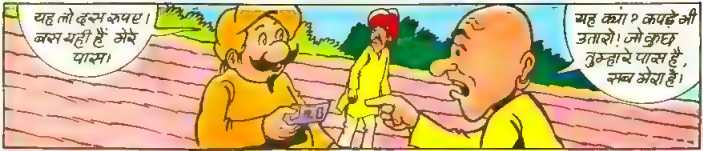
अरे ओ,
कर्मबन्धन! क्या
कर रहे हो?

गुरुजी!

गुरुजी!

तू कौन है रे? इनसे मेरा
सम्बन्धता है। जब तक मैं
सोचूँगा, ये स्वतः जाते हैं।
समझा!





इन्की कहापोह में-



नीचे
उतरों।

भुरता
बना दो।

इनकी
चोपड़ी तोड़
दो।

तुमने हमारे गांव का चैन
छीन लिया। अब हम तुम्हें
नहीं छोड़ेंगे। सीधी तरह
से चलो हमारे साथ!
वरना ..



पिद्दी पहलवान लाव पहलवान सही, लाठीधारी इतने आदमियों
से तोलव नहीं सकते थे। चुपचाप तखन और फुदकन के साथ
छपराबसी चल दिए। वहाँ-



सुस्विया जी,
ये रहे आपके
मुजरिम।

हाँ हा
हा इन्हें पीछे
वाली कोठरी में
डाल दो। कल इनका
भुरता बनाएंगे।

आए थे छब्बे
बनने दुब्बे बन
अए। अब क्या
होगा तुम्हें?

मैंने तो
पहले ही कहा
था कि यहाँ
तु ठगलबाब
कहा मिलेगा?



चुप रहो।
जहाँ हाथ पैरों की
कुश्ती काम न दे,
वहाँ अकल की
कुश्ती से काम लेना
चाहिए।

सांस रोककर
पिद्दी पहलवान
ने जोर लगाया
तो



फिर पिद्दी पहलवान ने
तखन की बस्त्रियां
खोल दीं।

जब तक मैं फुदकन
की रस्त्रिया खोलू,
तुम जगले मे बाह डाल
कर दरवाजे की
साफल खोल
दो।

मेरी
बाह काफी
लम्बी है। साफल
खुल जाएगी!



राज कॉमिक्स

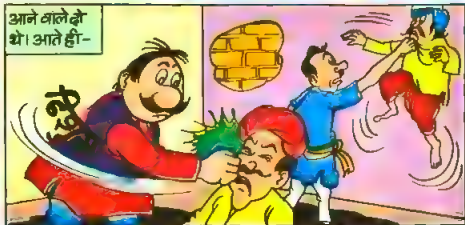
खरवाजा खुला किन्तु -



छत पर पहुँचते ही -



आने वाले दो
थे। आते ही -



बुरी तरह चित
हो गए बेचारे।



कोठरी में -



जेव्हा वीर गठरी पीठसे बांध
कार फुडकान वत से फुडका
तो-

शाल्यान्

मगर
हम?

उफ़!

हमें तब तक उसी कोठरी में रहना है, जब तक कुदकन गाड़ी तक न पहुँच जाए।

जब लोकमंडे
के पास पहुंचे तो-

लगाता है लीनो
आगवाए।

मगर
भाग कर जाओ
कहाँ? बाहर के
दरवाजे पर तो
पहरा था।

મારે ઝાટ!

संगणक-

अब नहीं
बचोगे

तीसरा
कहाँ है?

यह लो
इनको तो ऊपर
पहुंचाओ!

अध्यात्मिक-

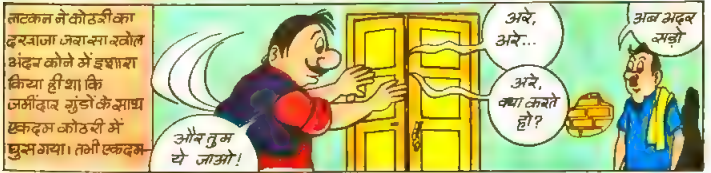
हा...हा...
हा...हा...
हा...हा...!



हंसते क्यों
हो? जल्दी
बोलो। वज्जी।

हमें मारकर तुम यह
कामी न जान पाओगे कि
ऊपर की कोठरी में रखे
जेवरात हमने कहाँ
छिपाए हैं?

हां!



लखनऊ के ठग

लखनऊ पहुंच कर-

कैसे धन्यवाद
दूं ?

यह तो
सेठ! तुम्हारे
जेवर

पिट्टी
पहलवान
गिन्दाबाद

और छपरासी में-

मुस्वियाजी,
छपराइयेनही!
मेरी बात अनिय
पिट्टी पहलवान
धूल घटेगा!

हां!

हां!

हम उसे
बिट्टी में
मिलाकर
देम लेगे!

रात को
झराये में-

गुरुजी, अब तो
बता दीलिए, आपने
कैसे जाना जेवरो का
ठग छपरासी का
जमींदार है ?

नकली जवाब ने सेठ धर्मपत
के लडके को ठगा पिताने के
लिए जिससे कहा था, उसका नाम
धुलिया था। और हमें पता है कि
धुलिया जमींदार के गुंडों में से
भी एक का नाम था। याद है न जब
हमसे जमींदार काम करवा रहा था
तब उसने अपने एक नौकर को
स्वामा लाने के लिए कहा था।
उसका नाम धुलिया था।

कमरे से
बाहर-

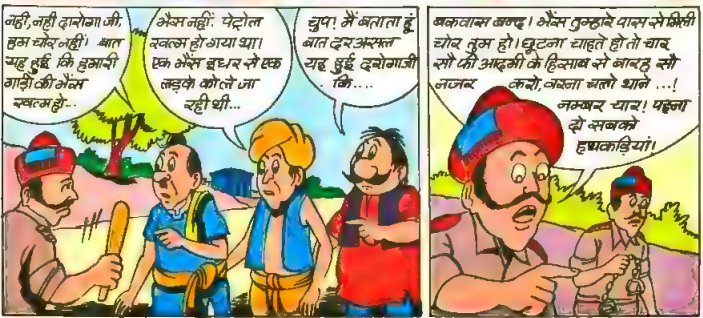
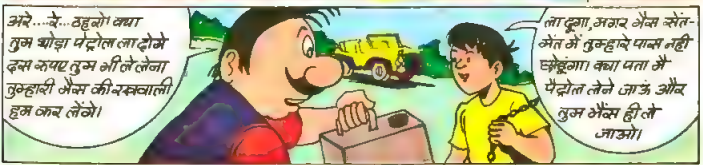
अब हम यहाँ नहीं रहेंगे।
कल सवेरे ही कानपुर
चल देंगे। अब सो
जाओ, जल्दी
उठना है।

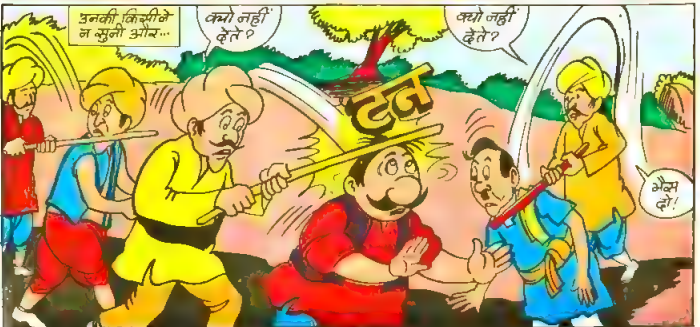
शालाबन!
कल सवेरे
कानपुर जाने वाली
सड़क पर...

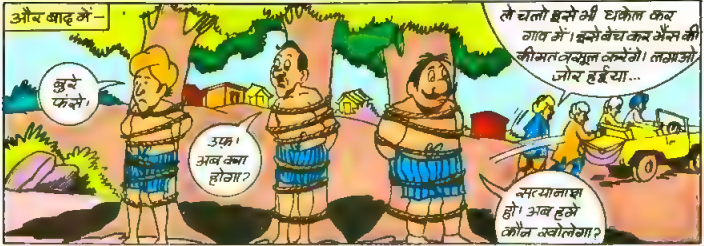
समक
गया।

अगले दिन सवेरे-

उफ़!
लखनऊ से
निकले भी नहीं
कि पेट्रोल खत्म
हो गया।







जमींदार ने उनके कपड़े लौटाए और उन्हें खेत में ले आया।

देखो, यह मेरा खेत है। तुम तीनों इसके अटपट जोत डालो। फल मुझे फसल मिलेगी है।

अबल के दांव पेंच दिखाने होंगे। वरना... जीवन भर...



जमींदार चला गया तो-

मारे गए!... आसो आग चलें। जान बचाए।

जहंने कहा! इतने सारे लठे तो से लठना भी तो कठिन है!

उहरो! सोचने दो... हम खेत रात को खोदेंगे। अबल की कुशती।

मैं और लठकन फावड़ों से खेत के कीचों की गड़ढा खोदेंगे। फुदकन पत्थर पर कुदाल की चोट करेगा।



रात को-

आवाजे गायतक पहुंच रही होंगी?

भगवान जाने इससे क्या होगा?



सुनो-सुनो! मुखिया के खेत की ओर से ये आवाजे कैसी आ रही हैं?

लगता है कोई जमीन खोद रहा है!

देखना चाहिए!

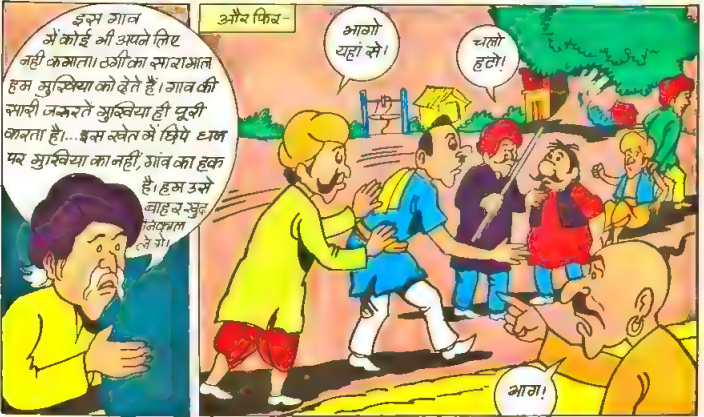
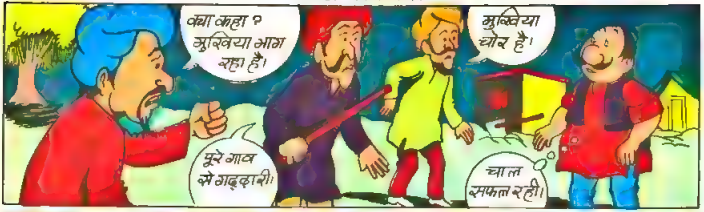
चलो आइयों चलो!



ऐ, यह तुम खेत क्यों खोद रहे हो?

मुखिया गांव छोड़ कर जा रहा है। आप लोगों से छिया कर उसने उगी का काफी माल यहां गाड़ रखा है। उसे खोद रहे हैं। उसने मंगवाया है।







और अंत में, गाड़ी एक भूसे के ढेर से टकरा गई।



तीलों के हाल बेहाल-



अपनी गठरी में से भंडावा कपड़े निकाल कर उन्होंने पहन लिए।



थिवड़ी पहलवान, लटकन और फुदकन के जाने के बाद कोतवाली में —

जमा करो सबको धमकूँ ले लो। हम देखते हैं कि वह बंदूकश इस खजाने को अकेला ही कैसे हजम करेगा। जल्दी करो! वह भाग न जाए!



जल्दी चलो!



ये जैसे ही आगे जाएं, हम भाड़ी ले कर सौधे कालपुर खाना हो जाएंगे।

अब पता पड़ेगा बच्चू को!

हमसे दुश्मनी मोल लेने का नतीजा।

उधर दिन निकलते ही—



ऐ तुम लोग मेरे खेत को क्यों खोद रहे हो?

जह, मुखिया जी! हमारी कमाई हमी से छिपाई। खेत का सारा खजाना हमारा है। आप चुप रहो!

तुम्हारा दिमाग तो खजाना जेही हो गया? कैसा खजाना? मेरे नौकर कहाँ हैं?



इसे जिंदा गाड़ दो!

यह दोस्तेबाज है!

इसे मार डालो!

अरे, कोतवाल जी!... यहाँ!



घाय... घाय...

चुप रहो! जो जहाँ है, वही हाथ उठाकर खड़ा रहे।

